विचार बिन्दु

साधारण लोग अपनी हर बुराई का दोषी किसी और को ठहराते हैं, अल्पज्ञानी स्वयं को, पर ज्ञानी किसी को नहीं। –इपिक्टेतस

एक नागरिक के रूप में हम कितने असहाय हैं!

पांच राज्यों में विधान सभाओं के चुनाव संपन्न हो गए, परिणाम भी आ गए और अब, जब कि मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूं, और जब आप मेरा लिखा पढ रहे होंगे तब भी, दो राज्यों में जहां मुख्यमंत्री घोषित हो चुके हैं शेष बचे तीन में से किस-किस राज्य में कौन मुख्यमंत्री बन रहा है, यह रहस्य शायद बना ही हुआ होगा। चुनाव के बाद, जैसा हमेशा होता है विश्लेषक गण हमें यह बताने के लिए ओवरटाइम कर रहे हैं कि जो हुआ वह क्यों हुआ, और जो नहीं हुआ वह क्यों नहीं हुआ। इनको पढते हुए लगता है कि ये सब कुछ जानते थे, और अगर इनकी सलाह ली गई होती तो जो हारे वे हारते नहीं, और जो जीते वे जीतते नहीं। अब यह बात अलग है कि अपनी सारी विशेषज्ञता ये चुनाव परिणाम आने के बाद बता रहे हैं। असल में हमारे यहां पूरी चुनाव प्रक्रिया की एक रिवायत बन गई है और हर चुनाव के बाद पूरे भक्ति भाव से उसका निर्वाह होता है। जीत-हार का विश्लेषण उसी प्रक्रिया का एक हिस्सा है। इसी प्रक्रिया का एक और अध्याय है विधायकों द्वारा अपने नेता का चुनाव। हर दल को चाहे वह चुनाव में बहुमत ला सका हो या अल्पमत में रहा हो, अपने नेता का चुनाव तो करना ही होता है। बहुमत वाले दल के नेता को महामहिम राज्यपाल सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करते हैं और अल्पमत वाले दल के नेता को, अगर वह दल कुछ आवश्यक शर्तें पूरी करता है, विपक्ष के नेता का दर्ज़ा मिलता है। सैद्धांतिक रूप से तो निर्वाचित विधायकों को अपने नेता का चुनाव करना चाहिए, और इसीलिए विधायक दल की बैठक आयोजित भी की जाती है, लेकिन पिछले काफी समय से हो यह रहा है कि विधायक गण एक वाक्य का प्रस्ताव पारित कर अपने दायित्व की इतिश्री मान लेते हैं। ऐसा सभी दलों में होने लगा है। प्रस्ताव यह होता है कि हम अपने नेता के चयन का फैसला हाई कमान पर छोडते हैं! नेता विधायकों को चुनना था लेकिन उनकी त्याग भावना देखिए कि वे अपना अधिकार केंद्रीय नेतृत्व को खुशी-खुशी सौंप देते हैं। यह अलग-अलग तरीकों से होता है। कभी प्रस्ताव पारित करने की भी ज़रूरत नहीं पडती। केंद्रीय नेतृत्व अपना पर्यवेक्षक भेज देता है जो निर्वाचित विधायकों को बता देता है कि अमुक जी को नेता चुनना है, और पार्टी के वे सारे वफादार सैनिक वैसा ही करते हैं। इस बार यह प्रक्रिया थोडी अलग हुई है। केंद्र ने तीनों राज्यों में अपने पर्यवेक्षक भेजे हैं जो विधायकों की राय जानेंगे, और उसके बाद फैसला दिल्ली से घोषित होगा। बात यहीं ख़त्म नहीं हो जाती है। ऐसा बहुत कम होता है कि बाद के कामों में, जिनमें मंत्री मण्डल का गठन सबसे पहले आता है, उस तथाकथित चुने हुए नेता को अपने विवेक का इस्तेमाल करने की छूट मिले। इसके लिए भी उसे केंद्रीय नेतृत्व ही निर्देश प्रदान करता है और वह एक बार फिर पार्टी का वफादार कार्यकर्ता होने का सबूत देता है। हो सकता है, पढते हुए आपको भी यह सब हास्यास्पद और जनतंत्र का उपहास लगे, लेकिन होता यही है। जो भी दल सत्ता में रहे हैं, वे करीब-करीब यही करते हैं।

सोचने की बात यह है कि जब शुरुआत ही इस बात से होती है कि नेता के चयन में विधायकों की कोई भूमिका नहीं होती है, तो आगे नीति निर्माण में, जिसके लिए उन्हें चुना जाता है, उनकी कितनी चलती होगी? उन्हें तो हर कदम पर पार्टी के वफादार कार्यकर्ता होने का फर्ज़ अदा करते रहना होगा।

गड़बड़ की शुरुआत इससे भी पहले हो जाती है। कोई पार्टी किसे टिकट देगी, यह शायद किसी को भी पता नहीं होता है। आखिरी क्षण तक रहस्य बना रहता है, और फिर अचानक फैसला सामने आता है। बताना अनावश्यक है कि उस फैसले की डोर किनके हाथों में होती है। इसके बाद शुरू होता है अनुमानों का दौर कि क्यों किसी को टिकट मिला और क्यों किसी का टिकट कटा। कोई भी दल कोई सुनिश्चित और पारदर्शी प्रक्रिया नहीं अपनाता है। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि फैसलों में आला कमान की भूमिका बडी होती है। अब आला कमान भी एक ऐसी अभिव्यक्ति है जो सदा रहस्य के आवरण में दबी-ढकी रहती है। एक पार्टी दूसरी पार्टी के आला कमान की आलोचना और उसका उपहास करती है लेकिन करती ख़ुद भी वैसा ही है। परिभाषित भले ही न हो, यह सब को मालूम होता है कि आला कमान कौन है!

क्या कभी कोई निर्वाचित जन प्रतिनिधि अपने मतदाता से उसका दुख-दर्द पूछता और उनका निवारण करने के प्रति सचेष्ट पाया जाता है? जितनी तत्परता ये जन प्रतिनिधि अपनी सुख-सुविधाओं वेतन भत्तों को बढ़वाने में दिखाते हैं क्या उस तत्परता का एक बहुत छोटा अंश भी वे अपने मतदाता की सुख-सुविधाओं की सुनिश्चितता के लिए प्रदर्शित करते नज़र आते हैं?

अब तक हमने बात की विधायकों के एंगल से। अब ज़रा इस पूरी प्रक्रिया को मतदाता के एंगल से भी देखें। क्या मतदाता के सामने वाकई कई विकल्प होते हैं जिनमें से वह किसी को चुन सके? मतदाता उम्मीदवार को वोट देता है या पार्टी को? अगर वह उम्मीदवार को देता है तो उसके निर्णय का आधार क्या होता है? क्या वह जाति या धर्म को देखकर वोट देता है? क्या वह उम्मीदवार की शिक्षा, उसके आचरण, उसकी सुलभता, उसकी सेवा भावना, उसकी ईमानदारी, उसकी सादगी, उसकी सहजता वगैरह को देखकर वोट देता है? इनमें से ज़्यादातर बातों का पता किसी मतदाता को कैसे लगता है? क्या मतदाता कभी यह भी सोचता है कि विधायकी के पांच सालों में उसके विधायक का वैभव किस जादू से बढ़ा है?

क्या मतदाता, अगर उसे पता चल भी जाए कि उसके सामने मौजूद प्रत्याशी का कोई आपराधिक रिकॉर्ड है, तो वह उस प्रत्याशी विशेष को वोट नहीं देता है? क्या एक नागरिक किसी ऐसे प्रत्याशी को वोट देने में तनिक भी नहीं हिचकिचाता है जो व्यक्तिगत रूप से तो उसकी पसंद की कसौटी पर खरा उतर रहा है, लेकिन जो एक ऐसे दल से चुनाव लड रहा है जिसकी घोषित नीतियां उसे पसंद नहीं है? और क्या मतदाता कभी भी इस बात से हैरान परेशान नहीं होता है कि अपने राजनीतिक जीवन का बडा हिस्सा किसी एक दल में बिताने वाला कोई प्रत्याशी उस दल का टिकट न मिलने पर पल भर में अपनी निष्ठा बदल कर उस दल का गुणगान करने लग जाता है जिसे अब तक वह पानी पी-पी कर कोसा करता था!

क्या तब मतदाता के मन में पल भर को भी यह बात नहीं आती है कि जो प्रत्याशी इस तरह अपनी निष्ठा बदल सकता है, उसको वोट क्यों दिया जाए? और अगर कोई पार्टी को देखकर वोट दे रहा है तो उसके निर्णय का आधार क्या बातें होती हैं? क्या वह यह देखता है कि उस पार्टी विशेष की कौन कौन-सी नीतियां उसके हित की हैं? क्या वह एकाधिक पार्टियों की नीतियों की तुलना करता है? क्या पार्टियां अपनी नीतियों की स्पष्ट घोषणा करती हैं? क्या एक नागरिक यह भी देखता है कि जिस पार्टी को वह वोट दे रहा है उसकी कथनी और करनी में कोई अंतर तो नहीं है? क्या वह यह भी देखता है कि चुनाव के समय किए गए वादों को पूरा करने का उस दल विशेष का ट्रैक रिकॉर्ड कैसा है? क्या वह यह सब न करके पार्टी के किसी एक नेता की छवि पर मुग्ध होकर उसके पक्ष में मतदान करने का फैसला कर लेता है? अगर वह ऐसा करता है तो क्या वह यह भी सोचता है कि जिस छवि पर वह मुग्ध हुआ है वह छवि कितनी असली है और कितनी संचार माध्यम निर्मित और प्रचारित है!

क्या मतदाताओं को यह भी एहसास है कि अपने देश-प्रदेश के भाग्य निर्धारण में उनकी क्या भूमिका है? और क्या यह भूमिका पांच बरस में एक बार बायें हाथ की उंगली पर अमिट स्याही लगवा लेने से आगे भी है। क्या उसके भाग्य विधाता पांच बरस में कभी भी उससे पूछते हैं कि बता तेरी रज़ा क्या है? किन चीज़ों पर टैक्स लगाया जाए और किन पर छूट दी जाए? कहां सड़क बनवाई जाए और कहां स्कूल खोला या क्रमोन्नत किया जाए? क्या कभी कोई निर्वाचित जन प्रतिनिधि अपने मतदाता से उसका दुख-दर्द पूछता और उनका निवारण करने के प्रति सचेष्ट पाया जाता है? जितनी तत्परता ये जन प्रतिनिधि अपनी सुख-सुविधाओं वेतन भत्तों को बढ़वाने में दिखाते हैं क्या उस तत्परता का एक बहुत छोटा अंश भी वे अपने मतदाता की सुख-सुविधाओं की सुनिश्चितता के लिए प्रदर्शित करते नज़र आते हैं? अगर हां, तो क्या लोग उसी जन प्रतिनिधि को फिर से चुन लेते हैं? और अगर नहीं तो क्या वे कभी उससे कोई सवाल भी करते हैं? बहुत बार यह भी होता है कि एक व्यक्ति किसी ख़ास जगह से चुनाव जीत कर पूरे पांच साल गायब रहता है और फिर उसकी पार्टी उसे किसी और जगह से टिकट दे देती है, ताकि वह वहां के मतदाताओं को भी छल सके। इस संचार बहुल समय में भी मतदाता क्या इस जानकारी का कोई सार्थक उपयोग करते हैं?

अगर ईमानदारी से कहूं तो मुझे तो बहुत बार बडी निराशा होती है। मुझे लगता है कि हमारे यहां लोकतंत्र नाम मात्र को है, दिखावटी है। हम मौके-बेमौके उस पर गर्व करते हैं, लेकिन यथार्थ उतना खुशनुमा नहीं है। एक नागरिक के रूप में हम तो बेबस और लाचार हैं ही, अब तो यह भी देख रहे हैं कि जिन्हें हमने चुना है वे भी हमारी ही तरह बेबस और लाचार हैं! अंतर है तो बस इतना कि कम से कम उनके पास भौतिक संसाधनों का वैसा अभाव नहीं है जैसा दारुण अभाव उन्हें चुन कर भेजने वाले हम मूक नागरिकों को आए दिन सहना पडता है!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

दुनिया का सबसे ऊंचा एवं लंबी दूरी तय करने वाला ''डेलमेसियन पेलिकन पक्षी'' मोरेल बांध पहुंचा

''डेलमेसियन पेलिकन पक्षी'' यूरोप, साइबेरिया से हजारों किलोमीटर की यात्रा कर पहुंचता है मोरेल बांध

मोरेल बांध पर सबसे ऊंची उड़ान भरने वाले लंबी दूरी तय कर मंडल बांध पहुंच प्रवासी पक्षी ''डेलमेसियन पेलिकन''।

मंडावरी, (निसं)। क्षेत्र में जैसे-जैसे तापमान में गिरावट दर्ज की जा रही है उसी के अनुरूप मोरेल बांध में विभिन्न नामचीन प्रवासी पक्षियों का जमावड़ा बढ़ता जा रहा है। मोरेल बाध पर तापमान गिरावट होने के साथ दुनिया का सबसे ज्यादा ऊंचाई पर उड़ने एवं लंबी दूरी तय करने वाला डेलमेसियन पेलिकन पक्षी यूरोप साइबेरिया से हजारों किलोमीटर की यात्रा कर करीब 80 से 100 की संख्या में बांध पर खुद की मौजूदगी दर्ज कर रहा है। शीत ऋतु परवान चढ़ते ही मोरेल बांध पर प्रवासी पक्षियों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है।

मोरेल बांध पर पिछले लंबे समय से प्रवासी पक्षियों का डेटा संधारण का कार्य कर रहे राजकीय कन्या महाविद्यालय लालसोट के प्राचार्य प्रोफेसर सुभाष पहाड़िया ने बताया कि मोरेल बांध पर इन दिनों अन्य पक्षियों के साथ विश्व के सबसे बड़े उड़ने वाले जलीय पक्षी डेलमेसियन पेलिकन जिन्हें सामान्य रूप से हवासील भी कहते है। लगभग 80 से 100 की संख्या में विचरण करते दिखाई दे रहे है। डेलमेसियन पेलिकन आई यू सी एन की रेड डेटा लिस्ट में वल्नरेबल श्रेणी में रखे गए है। ऐसे में इनके संरक्षण हेतु यह बांध अपनी महती भूमिका निभा रहा है। ये पक्षी अपने भारी भरकम शरीर और लंबी थैलियुक्त चोंच के कारण बड़े आकर्षक लगते है। ये शीतऋतु में जब यूरोप और साइबेरिया में बर्फ गिरती है तो ये पक्षी भारत मे हजारो किलोमीटर की यात्राकर प्रवास पर आते है।

पक्षी विशेषज्ञ प्रोफेसर पहाड़िया के अनुसार पिछले वर्ष भी दिसंबर में इनकी संख्या देखी गई थी। वही इस बार भी लगभज 100 के करीब दिखाई दे रही है। इससे यह अनुमान है कि अभी इनकी संख्या में और इजाफा हो सकता है। मोरेल बांध का वातावरण इन प्रवासी पक्षियों को रास आ रहा है। यही कारण है कि बांध पर बड़ी संख्या में विभिन्न प्रवासी पक्षी खुद की मौजूदगी बनाकर पर्यटकों को एवं पक्षी प्रेमियों को खुद की ओर आकर्षित कर रहे हैं। अब तक यहां पलास गल, ब्लेक हेडेड गल, रूड़ी शेल्डक, नोबबिल्ड डक, स्पूनबिल, रिवर टर्न, व्हिसकर टर्न, ब्लेक टेल्ड गोडविट, रफ, ठो हेरोन, परपल हेरॉन, इंडियन स्पोटबिल डक, लिटिल रिंग प्लोवर, ऑस्प्रे, सेंडरलिंग, कॉमन टील, ठोट व्हाईट पेलिकन, गेडवेल, व्हिसकर नॉर्दन शॉवलर, रूडी शेल्डक आदि जलीय पक्षी हजारों की संख्या में आगमन हो चुका है।

प्रोफेसर पहाड़िया के प्रयास से ही पिछले साल से बांध में आठ फिट पानी रिजर्व रखने के आदेश जारी हुए थे। अब ज्यादा पानी इस बांध में रिजर्व रहने के कारण जलीय जीव लंबे समय यहां पर प्रवास कर पाएंगे। इस बांध की समृद्ध जैवविविधता के कारण इसे कंजेर्वेशन रिजर्व घोषित किया जाना चाहिए। वहीं स्थानीय किसानों द्वारा कहा गया कि लंबे समय से यहां मोरेल बंद पर सुरक्षित माहौल के चलते ख्यात नाम प्रवासी पक्षी यहां पहुंचते हैं एवं जिन पर्यटकों को यहां के बारे में पता है वह मोरल बाध पर इन पक्षियों को देखने के लिए आ रहे हैं। किसानों ने कहा कि अगर इस जगह को पर्यटन के रूप में विकसित किया जाने के साथ लोगों के लिए यह आय रोजगार का जरिया बन सकता है एवं चित्र विकसित होने के साथ पर्यटन की पर्यटन को बढ़ावा मिल सकता है।

जोधपुर में बन रहे अक्षरधाम मंदिर में स्तम्भ स्थापित

जोधपुर के कालीबेरी में बन रहा है अक्षरधाम मंदिर

- पंद्रह सौ यजमानों ने एक साथ किया पूजन, कार्यक्रम में साधु संतों के साथ जनप्रतिनिधि भी शामिल हुए
- मंदिर में कुल 251 स्तंभ लगने हैं, इनमें 125 स्तंभ प्रथम तल पर लगाए जा चुके हैं

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर के कालीबेरी में बन रहे अक्षरधाम मंदिर का 65 फीसदी काम पूरा हो गया है। रविवार को निर्माणाधीन मंदिर के प्रथम तल पर स्तम्भों को स्थापित किया गया। इस दौरान 1500 यजमानों ने एक साथ पूजा की। बड़ी बात यह है कि यह देश का पहला ऐसा अक्षरधाम मंदिर है जिसमें जोधपुरी पत्थर का इस्तेमाल किया जा रहा है। देशभर में करीब 150 अक्षरधाम मंदिर हैं। सभी मंदिरों में बंशी पहाड़पुर और मकराना के मार्बल का उपयोग हुआ है। जोधपुर के कालीबेरी में पहला ऐसा मंदिर बन रहा है जिसमें केवल जोधपुर का पत्थर ही काम लिया जा रहा है। कार्यक्रम में साधु संतों के साथ जनप्रतिनिधि भी शामिल हुए।

मंदिर में स्तंभ स्थापन समारोह स्वामी नारायण मंदिर की परंपराओं के अनुसार किया गया। रविवार को स्तंभ स्थापना कार्यक्रम में देशभर से मंदिर संस्था से जुड़े श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। मंदिर में लगने वाले स्तंभों का पूजन स्कूली बच्चों ने किया। पूजन के लिए 500 से अधिक बच्चों का रजिस्ट्रेशन किया गया था। यहां तिलक करते हुए बच्चों की फोटो भी खींची गई। स्तंभ का वैदिक मंत्र उच्चारण के साथ पूजन किया गया। इस दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं ने स्वामीनारायण भगवान के जयकारे भी लगाए। मंदिर में कुल 251 स्तंभ लगने हैं। इनमें 125 स्तंभ प्रथम तल पर लगाए जा चुके हैं। द्वितीय तल पर भी इतने ही स्तंभ लगेंगे। मंदिर का निर्माण सनातन शिल्प परंपरा के तहत नागर शैली में किया जा रहा है। इन पिलर को सिरोही घाट शैली में बनाया गया है। स्वामी नारायण संस्था निर्माण कार्य करा रही है। मंदिर के द्वारा आसपास के क्षेत्रों में नशा मुक्ति के प्रति जागरूक करने, बाल कल्याण आदि के लिए भी जागरूकता शिविर चलाए जाएंगे।

मंदिर के योगी प्रेम स्वामी महाराज ने बताया कि आज के समय में युवा पीढ़ी नशे की चपेट में आकर भटकाव की राह पर है। उन्हें रोकने के लिए भी मंदिर में समय-समय पर कार्यक्रम होंगे और उन्हें जागरूक किया जाएगा। मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा सवा साल में की जाएगी। जोधपुरी पत्थर से बन रहे इस मंदिर का 65 प्रतिशत तक बन चुका है। वहीं मंदिर के अतिरिक्त यहां 3 हजार लोगों के बैठने का सभा मंडप, भोजनशाला आदि बनाई गई है। वहीं बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए भी रुकने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त कमरे बनाए गए हैं।

आर्मी डेजर्ट कोर ने इस्लामगढ़ फतेह दिवस मनाया

पत्र सूचना कार्यालय (रक्षा शाखा), भारत सरकार

कोणार्क 'विजय दिवस' के स्मरणोत्सव के हिस्से के रूप में, इस्लामगढ़ फतेह दिवस एकलिंगगढ़ सैन्य स्टेशन, उदयपुर में 6 से 8 दिसंबर 2023 तक मनाया गया। 1971 में जैसलमेर/रेगिस्तानी क्षेत्र में पाकिस्तान पर विजय के 52 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में ये समारोह हमारे सैनिकों को श्रद्धांजलि दी गई जिन्होंने 1971 के युद्ध में इस्लामगढ़ किले पर कब्जे के दौरान अदम्य भावना और बलिदान का प्रदर्शन किया था।

भारतीय सेना ने उदयपुर के एकलिंगगढ़ सैन्य स्टेशन में युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करके युद्ध के शहीद नायकों को श्रद्धांजलि दी। शहीद नायक को श्रद्धांजलि के रूप में उदयपुर के एकलिंगगढ़ मिलिट्री स्टेशन में हवलदार दयानंद राम, वीर चक्र (मरणोपरांत) की प्रतिमा का अनावरण किया गया। आउटरीच कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, भारतीय सेना के जवानों ने वीर नारियों और 1971 के युद्ध के दिग्गजों के साथ भी बातचीत की जिसमें कृतज्ञता के संकेत के रूप में, भारतीय सेना ने वीर नारियों की सराहना की और समारोह के दौरान युद्ध के दिग्गजों को सम्मानित किया।

–कर्नल अमिताभ शर्मा,
जन संपर्क अधिकारी
(रक्षा)
जयपुर, (राजस्थान)।

दो लाख हेक्टैयर में बिजाई का अनुमान

जिस तरह से सिंचाई पानी की आपूर्ति हो रही है, उसे देखते हुए 15 दिसम्बर तक बिजाई कार्य जारी रहने की उम्मीद

हनुमानगढ़, (निसं)। जिले में इस समय गेहूं की बिजाई तेजी से चल रही है। अभी तक करीब एक लाख 80 हजार हेक्टैयर में गेहूं की बिजाई पूर्ण होने की बात अधिकारी कह रहे हैं। लेकिन जिस तरह से सिंचाई पानी की आपूर्ति हो रही है, उसे देखते हुए 15 दिसम्बर तक बिजाई कार्य जारी रहने की उम्मीद है। इस तरह करीब दो लाख हेक्टैयर में गेहूं की बिजाई संभावित है।

वहीं सवा दो लाख हेक्टैयर में सरसों की बिजाई हो चुकी है। ऐसे में इन फसलों को सिंचाई पानी देने के लिए जल संसाधन विभाग स्तर पर इंदिरा गांधी नहर के रेग्यूलेशन को रिवाइज करने की तैयारी शुरू कर दी गई है। अब 14 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक नहर को चार में दो समूह में चलाने की बात अधिकारी कह रहे हैं। हालांकि इसकी स्थिति तभी साफ होगी, जब रिवाइज रेग्यूलेशन को सिंचित क्षेत्र आयुक्त कार्यालय बीकानेर से मंजूरी मिल जाएगी।

इस बीच हरिके हैड से राजस्थान के शेयर में हो रही कमी का क्रम अब थमने लगा है। जल संसाधन विभाग हनुमानगढ़ के एक्सईएन सुरेश सुथार ने हरिके हैड पर जाकर पानी की स्थिति को देखा। उन्होंने बताया कि हरिके हैड से राजस्थान के तय शेयर के अनुसार पानी प्रवाहित किया जा रहा है। इसका असर मसीतांवाली हैड पर नजर आने लगा है। अब पानी बढ ने का क्रम शुरू हो गया है। कृषि अधिकारियों के अनुसार इस वर्ष नरमा फसल की चुगाई देरी से होने के कारण गेहूं एवं जौ फसल की बिजाई में भी देरी हुई है। फलस्वरूप अच्छा उत्पादन लेने के लिए इन फसलों का विशेष प्रबंध करना आवश्यक है। गेहूं फसल में पीलापन की मुख्य समस्या रहती है।

इसके मुख्य कारण नाइट्रोजन की कमी, सूक्ष्म पोषक तत्व खासतौर पर जिंक की कमी, नेमेटोड की समस्या इत्यादि रहती है। जिले में काफी स्थानों पर गेहूं फसल में बाली निकलते समय मैंगनीज की कमी के लक्षण भी बहुतायत में देखने को मिलते हैं। उपयुक्त समस्याओं को उनके लक्षणों के आधार पर कृषि विभाग के फील्ड स्टाफ से संपर्क कर विभागीय सिफारिश अनुसार समय पर उचित प्रबंधन आवश्यक रूप से करना चाहिए। खड़ी फसलों में डीएपी उर्वरक का उपयोग लाभकारी नहीं है अत: डीएपी उर्वरक के स्थान पर सूक्ष्म पोषक तत्वों एवं नैनो डीएपी का छिडकाव फसल उत्पादन बढ़ ाने में अत्यंत कारगर होने के साथ-साथ सस्ता भी रहता है।

पांच-छह दिसम्बर से हरिके हैड से राजस्थान के शेयर में कमी का क्रम शुरू हो गया था। अब राजस्थान के अफसर जगेंहै तो शेयर में सुधार नजर आने लगा है। वर्तमान में हरिके हैड से राजस्थान का कुल शेयर 12000 क्यूसेक पानी निर्धारित है। अब लगातार दबाव बनाने पर हरिके हैड से शेयर के अनुसार पानी प्रवाहित किया गया है। इसका असर नजर आने लगा है। इंदिरागांधी नहर से राजस्थान के करीब बारह जिलों को जलापूर्ति होती है। इसमें हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर सहित अन्य जिले शामिल हैं। करीब दो करोड़ से अधिक आबादी को इस नहर से जलापूर्ति होती है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 11 दिसम्बर, 2023

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, विशाखा नक्षत्र दिन 12:14 तक, सुकर्मा योग रात्रि 8:58 तक, वणिज करण प्रात: 7:11 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृश्चिक, बुध-धनु, गुरू-मेष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से दिन 12:14 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 12:14 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा प्रात: 7:11 से सांय 6:48 तक है। आज चतुरदशी तिथि का क्षय हुआ है। आज मास शिवरात्रि है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: सूर्योदय से 8:22 तक, शुभ 9:45 से 11:02 तक, चर 1:37 से 2:55 तक, लाभ-अमृत 2:55 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:09, सूर्यास्त 5:30

मेष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

वृष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक समस्या दूर होने लगेंगी।

कर्क

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक प्रयास करना ठीक रहेगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या

आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

धनु

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। परिश्रम का उचित फल मिलेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मकर

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।